यूनिट – II

व्यक्तित्व विकास एवं संचार

यूनिट के उदेश्य

- व्यक्तित्व विकास की अवधारणा तथा उदेशयों के बारे में विधार्थियों को अवगत करना
- संचार प्रक्रिया में स्व–विकास तथा स्व–विकास में संचार प्रक्रिया के महत्व को समझना
- व्यक्तिगत दृष्टिकोण के सकारात्मक विकास का महत्व समझना तथा व्यक्तिगत दृष्टिकोण के विकास में सहायक तत्वों का अध्ययन करना
- दृष्टिकोण में परिवर्तन की महता का अध्ययन करना और सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में सहायक महतवपूर्ण घटकों का अध्ययन करना
- स्वोट विश्लेषण का अभिप्राय समझना तथा विधार्थियों को इसके मुख्य अंगों का अध्ययन करने योग्य बनाना
- सम्पूर्ण संचार के मुख्य पहलुओं को विधार्थियों के सामने लाना

1. व्यक्तित्व विकास, संचार, स्वोट विश्लेषण

व्यक्तित्व विकासः– समाज में रहने वाले व्यक्ति जिस तरह का संचार प्रेषित करते हैं उस का प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ता है। अतः किसी भी व्यक्ति का व्यवहार व सन्देश जो उस के द्वारा मौखिक या लिखित रूप में प्रेषित किया जाता है समाज के अन्यसदस्यों द्वारा प्राप्त किया जाता है। यह संचार प्रक्रिया किस प्रकार की होगी यह उन व्यक्तियों के स्तर तथा विकास को भीदर्शाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि व्यक्ति का विकास और समाज में संचार प्रक्रिया एक–दूसरे पर निर्भर करती हैं।

व्यक्तित्व विकास की अवधारणाः–एक व्यक्ति की शारीरिक क्षमता, बुद्विमता आत्मसयंम, उसके सवांद, प्रभावशीलता, भावकुता तथा उस की सामंजस्य करने की कला अदि विशेषताएं जान कर उस के व्यक्तित्व के बारे में जाना जा सकता है। सामाजिक प्रक्रिया में व्यक्तित्व विकास का बहुत महत्व होता है। एक व्यक्ति का दृष्टिकोण उस के व्यक्तित्व विकास को काफी हद तक प्रभावित करता है। एक व्यक्ति का स्वविकास उस की कार्य करने की क्षमता, बुद्धिमता, सहनशीलता आदि विशेषताओं को प्रक्रिया का परिणाम होता है।

व्यक्तित्व विकास का उद्धेश्यः– व्यक्ति विकास निजी तथा सामूहिक रूप से एक व्यक्ति को जीवन व्यतीत करना सिखाता है। अपने उद्देश्यों को किस प्रकार प्राप्त कर सकता है स्वविकास की महत्वपूर्ण अवधारणा है। एक व्यक्ति समाज में स्वयं केविकास के लिए प्रयत्नशील रहता है। इस के बहुत से महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. स्वाभिमान का विकास
2. निर्णय लेने की क्षमता का विकास
3. दृष्टिकोण का विकास
4. आत्मविश्वास का विकास
5. सभ्यता का विकास

6. बुद्धिमता का विकास
7. विचारमय शक्ति का विकास
8. समय के सदुपयोग का विकास

स्व–विकास तथा संचार प्रक्रिया

स्व–विकास संचार प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्व. विकास संचार प्रक्रिया को प्रभावशाली व गतिशील बनाता है। संचार के आधुनिक साधनों में स्वविकास अधिक सहयाक होता है। संचार प्रक्रिया वस्वविकास के पारस्परिक सम्बन्ध के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं–

1. संचार प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाना
2. विशाल दृष्टिकोण प्रदान करना।
3. विश्लेषण क्षमता का विकास
4. संचार शैली में सुधार।

संचार तथा स्व–विकास

प्रभावी संचार स्व–विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। प्रभावी संचार में शुद्ध व सही शब्दोंका प्रयोग स्व–विकास में योगदान देता हैं निम्नलिखित महत्वपूर्ण घटकों से यह पूर्णत्या स्पष्ट है कि स्व–विकास में प्रभावीसंचार का बहुत अधिक महत्व होता है–

1. शुद्ध व सही शब्दों का संचार में प्रयोग।
2. लिखित संचार से स्व–विकास में बढ़ोतरी।
3. मौखिक प्रभावी संचार से सव–विकास विकसित होना।
4. प्रभावी संचार में अच्छी श्रवण प्रक्रिया के प्रयोग से स्व–विकास विकसित होना।

व्यक्तिगत दृष्टिकोण का सकारात्मक विकास

(Personal attitude, its development in positive direction)

व्यक्तिगत दृष्टकोण के सकारात्मक विकास का विश्लेषण करने से पहले यह जानना जरुरी है कि दृष्टिकोण वास्तव में क्याहोता है। दृष्टिकोण एक तुलनात्मक शब्द है। यह मानव की दृष्टि, मानसिक प्रवृत्ति, उस की संस्कृति व व्यवहारिकता, समाज के प्रति उस का दृष्टिकोण, सोचने व समझने की प्रवृत्ति को प्रर्दर्शित करता है। दृष्टिकोण एक भावगत घटना है। व्यक्ति विशेषका विचार विश्लेषण करने की एक मानसिक प्रक्रिया है। दृष्टिकोण का एक व्यक्ति की पसंद नापसंद और उस के व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। दृष्टिकोण दूसरे व्यक्तियों के साथ संबंध बनाने में भी मदद करता है। किसी विशेष घटना को वर्णन व्यक्ति अपने–अपने दृष्टिकोण से अलग–अलग प्रकार से करते हैं। आज के वर्तमान युग के बारे में सभी व्यक्तियों के अलग–अलग दृष्टिकोण है। एक व्यक्ति गिलास को आधा खाली बताता है। दूसरा व्यक्ति उसी गिलास को आधा भरा हुआबताता है। यह सब दृष्टिकोण के कारण ही हैं। भावुकता, मानवता, दयालुता, समाज के प्रति व्यवहार सभी व्यक्तियों का एकसमान नहीं होता, यह भी दृष्टिकोण का ही उदाहरण है।

एक व्यवसायी को अपना व्यवसाय चलाने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता पड़ती है। दृष्टिकोण की बहुत सीपरिभाषाएं दी गई लेकिन सी॰टी॰ मोरगन तथा आर. रा. आइसिंग की परिभाषा सर्वोत्तम मानी जाती है। जो निम्न प्रकार से हैं–

"दृष्टिकोण किसी व्यक्ति, वस्तु तथा परिस्थिति के लिए सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति है। दृष्टिकोण के तीन तत्त्व मुख्य होते हैं, ज्ञान, भावना तथा कार्य।"उपरोक्त परिभाषा का विश्लेषण करने दृष्टिकोण और भी स्पष्ट हो जायेगा।

1. भाव तत्व :–एक व्यक्ति की किसी वस्तु या विषय के लिए जैसी भावना होगी उस का दृष्टिकोण भी वैसा ही बन जायेगा।

2. ज्ञान तत्व :– एक व्यक्ति का ज्ञान उस विशेष कार्य वस्तु या विषय के प्रति सकारात्मक व नकारात्मक दृष्टिकोण बनाता है।

3. क्रिया तत्वः– कार्य करने के प्रवृत्ति किस प्रकार की है यह भी दृष्टिकोण पर प्रभाव डालती है।

किसी विषय के लिए हमारे दृष्टिकोण निम्नलिखित दो महत्वपूर्ण घटक नियंत्रित करते हैं।

1.**सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावः–** हमारा दृष्टिकोण किसी विषय व कार्य के प्रति सकारात्मक है तो उस में सफलता प्राप्त कर सकते हैं यदि नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं सफलता कठिन होती है। प्रेरणा के द्वारा दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाया जा सकता है। प्रेरेणा एक प्रक्रिया है जिस के द्वारा दृष्टिकोण को परिवर्तित किया जा सकता है।

2. अनुसरण करना व त्याग करनाः– दृष्टिकोण के द्वारा ही व्यक्ति यह तय करता है कि किस विशेष प्रक्रिया को अपनानाचाहिए या त्याग कर देना चाहिए। जोन्स के दृष्टिकोण के विकास का एक बहुत उपयोगी मॉडल प्रस्तुत किया है। निम्न प्रकार से इस माडल को आसानी से समझा जा सकता है–

संचारक संचारण आस–पास परिस्थितियाँ लक्ष्य

प्रत्येक संचार प्रक्रिया में एक संचारक होता है जिस का अपना एक निश्चित मत होता है तथा वह अन्य लोगों को वह मत अपनाने

के लिए प्रेरित करता है। एक बार जो दृष्टिकोण बन जाता है वह उस व्यक्ति की मानसिक स्थिति निश्चित हो जाती है। यहीकारण है हर पीढ़ी में विचारों में अन्तर आ जाता है। जिस का दृष्टिकोण का अलग होना होता है नई वस्तु जब बाज़ार में आतीहै तो सस्ती व गुणता वाली होते हुए भी लोगों को अपनाने में समय लगता है।

व्यक्तिगत दृष्टिकोण के विकास में सहायक तत्व

व्यक्तिगत दृष्टिकोण एक व्यक्ति की मानसिक प्रस्तुति है जैसा कि हम उपरलिखित विकास से जान चुके हैं। इस मानसिकप्रवृत्ति के विकास में निम्नलिखित घटक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं–

1. विश्लेषणः– दृष्टिकोण वातावरण को समझाने में सहयता करता है। व्यक्ति किसी विषय के बारे में अपने ज्ञान के अनुसारविश्लेषण करता है तथा दृष्टिकोण अपनाता है। जैसा कि छोटे बच्चे को जब स्कूल भेजते हैं तो उस को अच्छा नहीं लगता,खेलना अच्छा लगता है। कई व्यक्ति पढ़ाई की तरफ नकारात्मक विचार बना लेते हैं। यह सब उस व्यक्ति के दृष्टिकोण द्वारा विश्लेषण कर के होता है।

2. सामाजिक पहचानः– व्यक्ति की समाज में पहचान व उस का समाज में स्थान भी उस के विचारों को किसी मामले केपक्ष या विपक्ष में बनाने में सहायक होता है। व्यक्ति विशेष का दृष्टिकोण ही समाज में उस का स्थान तय करने में सहायताकरता है। दोनों तत्व मिल कर व्यक्ति के दृष्टिकरण का विकास करते हैं।

3. सामाजिक वातावरणः– एक व्यक्ति का दृष्टिकोण सामाजिक वातावरण से भी विकसित होता है। सामाजिक वातावरणसही, अच्छा तथा अनुकूल मिलता है तो व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक रूप में विकसित होता है।

दृष्टिकाणे में परिवर्तन

(Change in Attitude)

संचार प्रक्रिया में संचारक द्वारा अन्य लोगों को अपने लोगों को अपने निश्चित मत को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस प्रक्रिया में संचारक सफल हो भी सकता है और नहीं भी। यदि सफल हो जाता है तो दृष्टिकोण में परिवर्तन कहा जा सकताहै। इस संचार प्रक्रिया में तीन महत्वपूर्ण घटक होते हैं संचारक, विचार तथा वातावरण, अतः इन के द्वारा यदि मानसिक स्थितिमें परिवर्तन हो जाता है तो यह मान लिया जाता है कि दृष्टिकोण परिवर्तन का परिणाम है।

व्यक्तिगत सकारात्मक दृष्टिकोण विकास

(Positive Development of Personal Attitude)

एक अच्छे संचारक द्वारा अपनी महत्वपूर्ण कला का प्रयोग करके एक व्यक्ति के दृष्टिकोण का सकारात्मक दिशा में विकास किया जा सकता है। लेकिन प्राप्तकर्ता संचारक की बातों को कितना महत्व देता है इस बात पर सफलता व असफलता निर्भर करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि एक बार किसी बस्तु या विषय के बारे में दृष्टिकोण बन जाता है तो वह इस व्यक्ति की मानसिकता मानी जाती है जैसे कोई व्यक्ति नहाने में किसी विशेष साबुन का प्रयोग करता है तो यह उस की मानसिकता बन जाती है। एक व्यक्ति के दृष्टिकोण को सकारात्मक कैसे बनाया जा सकता है इस का उत्तर उपर लिखित विवरण में पहली पंक्ति से ही मिल जाता है। एक संचाकर की प्रक्रिया किस प्रकार की होगी। इस विधि में निम्नलिखित घटक महत्वपूर्ण होते हैं–

1. सदेंश प्राप्त करनाः– सचांरक की विधि इस प्रक ार की हानेी चाहिए कि वह सदंशे प्राप्तकर्ता का ध्यान अपनी आरे आकर्षितकर सके। इस के लिए उस की रूचि जागृत करनी होगी तभी उस को संदेश ध्यानपूर्वक सुनने के लिए विवश किया जासकता है, अन्यथा संचारक की स्थिति उसी प्रकार होगी जिस प्रकार रास्ते में बैठ कर तमाशा दिखाने वाले की होती है।केवल वे ही व्यक्ति देखते व सुनते हैं जिन को समय पास करना होता है।

2. संदेश ग्रहण करनाः– सन्देश प्राप्त करवाने व सुनाने के लिए ध्यान आकर्षित किया जाता है। इस का अर्थ यह नहीं हैकि सन्देश को उस व्यक्ति ने ग्रहण कर लिया हागा। अतः उस संदेश को समझाए बग़ैर संचार का कार्य पूरा नहीं होता।अतः संदेश को हमेशा सरल व सक्षेप तथा आकर्षित बनाना चाहिए ताकि श्रोता ग्रहण कर ले।

3. प्रतिक्रिया देनाः– व्यक्ति सूचना ग्रहण करने के बाद उस की प्रतिपुष्टि भी करता है जो अनुकूल भी हो सकती है। तथाविपरीत भी हो सकती है। जरुरी नहीं है कि बहुत अच्छा दर्शाया गया विज्ञापन देखने वाले को पसन्द आए। संदेश में यदि विपरीत प्रतिक्रिया प्राप्त होती है तो प्रभावी संदेश नहीं माना जायेगा। व्यक्तिगत सकारात्मक दृष्टिकोण प्रतिक्रिया को निर्देशित करता है।

स्वोट विश्लेषण

(Swot Analysis)

स्वोट विश्लेषण का प्रयोग एक संगठन की प्रभावपूर्ण रणनीतियां बनाने में किया जाता है। इस का अध्ययन करने से पहले, अर्थजानना जरूरी है। स्वोट शब्द निम्नलिखित चार शब्दों से मिल कर बना है।

S- Strength–शक्ति
W– Weaknesses–कमजोरियां
O– Opportunities–अवसर
T– Threats–समस्याएं

स्वोट विश्लेषण के अनुसार एक संगठन की प्रभावपूर्ण राजनीति वह है जिस में व्यवसाय संगठन अपनी शक्ति, साधनों व क्षमता का प्रयोग कर के अपने अवसरों का अधिकतम लाभ उठाता है व समस्याओं तथा कमजोरियों को प्रभावहीन बना देता है।

स्वोट विश्लेषण के मुख्य अंग

(Components of Swot Analysis)

स्वोट विश्लेषण के मुख्य चार अंग हैं लेकिन व्यावसायिक वातावरण भी कम महत्वपूर्ण नहीं होता। वातावरण के दो मुख्य घटक होते हैं बाह्य तत्व व आन्तरिक तत्व। आन्तरिक घटकों को वो संगठन कुछ हद तक नियंत्रित कर सकता है लेकिन बाह्य तत्वभी व्यवसाय को प्रभावित करते हैं जैसे देश में वातावरण किस प्रकार का है शान्पिूर्ण है या आन्तरिक तथा बाह्य शक्तियां देशके सामने समस्याएं खड़ी कर रही हैं। वातावरण अच्छा है तो व्यवसाय को अवसर प्रदान करेगा तथा खराब वातावरण व्यवसाय के सामने समस्याएं उत्पन करेगा। निम्नलिखित विवरण से स्वोट के मुख्य अंग और भी स्पष्ट हो जायेंगे।

1. शक्ति या क्षमताएंः – एक व्यावसायिक संगठन के पास कुछ क्षमताएं उपलब्ध होती हैं जिन के कारण वह अपने प्रतिद्वन्दियोंसे मुकाबला करता है। और लाभ के अवसर प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए हिन्दुस्तान लिवर लिमिटेड क. अपने यहां शोध क्षमता पर पूरा ध्यान देती है और यही कारण है बाज़ार में इस के उत्पाद छाए रहते हैं।

2. कमजोरियांः– प्रत्येक संगठन में कुछ कमियां, कमजोरियां व दुर्बलताएं भी होती हैं जिन की तरफ यदि संगठन समय पर ध्यान नहीं देता है तो पिछड़ जाता है। उदाहरण के लिए यदि आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में कोई संगठन एक ही उत्पाद पर निर्भर रहता है तो यह उस की दुर्बलता कही जा सकती है।

3. अवसरः– व्यवसाय के अनुकूल परिस्थितियाँ जब बन जाती हैं तो उन को उस संगठन के लिए अवसर माना जाता है जिसका लाभ उस संगठन के द्वारा उठाया जा सकता है। उदाहरण के लिए उस व्यवसाय के किसी उत्पाद की मांग बढ़ रही हो तो अधिक उत्पादन कर उस का लाभ उठाना चाहिए।

4. समस्याएंः– एक व्यावसायिक संगठन के लिए जब परिस्थितियां प्रतिकूल हो जाती हैं तो उस के लिए समस्याएं बन जाती हैं। ये संगठन के लिए हानिकारक होती हैं। उदाहरण के लिए जैसे किसी व्यावसायिक संगठन के उत्पाद का प्रतिरथपन्नबाज़ार में कम कीमत पर उपलब्ध हो जाता है तो वह व्यवसाय के लिए समस्या है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि स्वोट विश्लेक्षण वातावरण को समझने, नीतियां बनाने, सही समय पर सही फैसले लेने, निर्णय लेने के लिए सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। अवसर का लाभ उठाने, समस्या से छुटकारा प्राप्त करने, प्रतिद्वन्दी का मुकाबला करने की कला सिखाने की विधि है।

पारस्परिक निर्भरता का मॉडल

(Vote's Model of Independence)

पारस्परिक निर्भरता का अर्थ है परस्परक निर्भरता अर्थात् एक दूसरे के अनुभवों का व नीतियों का लाभ परस्पर बांटना। आजका जमाना विशेषता का है, एक व्यक्ति या संगठन अपने आप में निपुण नहीं होता। यह उस समय और भी महत्वपूर्ण हो जाताहै जब एक संगठन व समूह के सभी सदस्य एक दूसरे से वार्तालाप करते हैं तथा निर्भरता का भाव रखते हैं।आजकल तो स्वचातिल उद्योगों में इस प्रकार की व्यवस्था बनी होती है एक व्यक्ति का कार्य दूसरे पर निर्भर करता है।यदि पहले वाले व्यक्ति ने समय पर कार्य पूरा नहीं किया तो उस से आगे की व्यवस्था ही खराब हो जाती है। इस के अतिरिक्त सामाजिक परस्पर निर्भरता भी समाजिक स्तर पर एक दूसरे पर निर्भर करती है। कोई व्यक्ति अपनी स्वयं की सभी आवश्यकताएं पूरी नहीं कर सकता।

परस्पिरिक निर्भरता निम्नलिखित दो प्रकार से हो सकती है–

1. सामूहिक न्यूनतम निर्भरताः– जब व्यक्तियों का एक समूह एक ही स्थान पर रहते हुए एक दूसरे पर कम से कम निर्भररहता है तो यह व्यवस्था न्यूनतम निर्भरता कहलाती है।

2. समूह की अधिकतम निर्भरताः– ऐसे में समूह की सफलता, समूह की निर्भरता पर निर्भर करती है। उन के मध्य में संचार प्रक्रिया अधिक होती है तथा एक दूसरे के साथ सामंजस्य रखते हैं। यह सदस्य सामाजिक स्तर पर एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। समूह की अधिकतम निर्भरता दो प्रकार की होती है, परस्पर सामाजिक निर्भरता व कार्य पर परस्पर निर्भरता। समूह द्वारा किए जा रहे कार्य में पारस्परिक संबधों की अधिक आवश्यकता होती है। जिस को अच्छा नेतृत्व करने वाला व्यक्ति ही पूरी कर सकता है। नेतृत्व एक प्रक्रिया है जिस से समूह के सदस्यों को प्रेरित कर के समूह के उद्वेश्य की पूर्ति कीजा सकती है या नेता व्यावसायिक संगठन को बना भी सकते हैं, खराब भी कर सकते हैं। नेतृत्व परिस्थितयां भी भिन्न–भिन्न होती हैं समयनुसार परिवर्तन होता रहता है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रभावी नेता कार्य करने की क्षमता को बढ़ाता है तथा सामाजिक स्तर पर पारस्परिक निर्भरता को बनाए रखता है।

संपूर्ण संचार

(Whole Communication)

संपूर्ण संचार का अर्थ व्यापक एवं विस्तृत संचार से है, जिस में प्रेषक के विचार, मूल्य एवं भावनाएं तथा सही तथ्यों का समावेशहोता है। एक साधारण संचार प्रक्रिया में केवल संचार के विषय पर ही ध्यान केन्द्रित रखा जाता है। दूसरे भावगत तथ्य जैसेमूल्य, भावनाएं, विचार, सुझाव की अवहेलता की जाती है। व्यक्तिगत विश्वास, मूल्य, तथा संदर्भ विशेष भी संचार को प्रभावितकरते हैं। निम्नलिखित चार घटक संपूर्ण संचार में महत्वपूर्ण होते हैं–

1. भावनाएँः– किसी विशेष समय पर विशेष परिस्थिति में हमारी मानसिक प्रतिक्रियाएं संपूर्ण संचार में शामिल होती हैं।

2. मतः– एक विशेष परिस्थिति अपनाया गया मत हमारे दृष्टिकोण को अवगत करवाता है।

3. मूल्यः– हमारे वे परिवर्तनीय विचार जो हम अपने बारे में, सभ्यता व समाज के बारे में बनाते, मूल्य प्रदर्शित करते हैं।

4. तथ्यः– अनुभव व विश्वास के आधार पर जिन घटनाओं को हम सत्य मान कर दर्शाते हैं वे तथ्य कहलाते हैं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार शरीर में रक्त का स्थान होता है उसी प्रकार संगठन में संपूर्ण संचार का महत्व आंका जाता है। सभी प्रबन्धकीय कार्यों की सफलता संपूर्ण व प्रभावपूर्ण संचार पर निर्भर करती है। आधुनिक युग में संपूर्णव प्रभावपूर्ण संचार, सन्देशवाहन को योग्यता की संगठन में जुड़े प्रत्येक व्यक्ति का मुख्य गुण माना जाने लगा है। संपूर्ण संचार व्यवस्था में जरुरी है कि हम अपनी श्रवण प्रक्रिया को भी प्रभावी बनाएं। संपूर्ण संचार प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता सभी माध्यमों द्वारा प्रेषित संदेश प्राप्त करता है।

लघु उत्तर वाले प्रशन

1. व्यक्तित्व विकास का अर्थ समझाओ।
2. स्वविकासतथा संचार प्रक्रिया का आपस में क्या सम्बन्ध है।
3. व्यक्तित्व सकारात्मकदृष्टिकोण विकास से आपका क्या अभिप्राय है?
4. स्वोट विश्लेषणसे आप क्या समझते हैं?
5. पारस्परिकनिर्भरता से आप क्या समझते हैं?
6. सम्पूर्ण संचार का अर्थ समझाओ।
7. सम्पूर्ण संचार के महतवपूर्ण घटकों का नाम बताओ।

दीर्घ उत्तर वाले प्रशन

1. व्यक्तिगत दृष्टिकोण के विकास मेंसहायक तत्वों का विस्तार से वर्णन करो।
2. व्यक्तिगत सकारात्मक दृष्टिकोण विकास का क्या अर्थ है। इसविधि में कौन से घटक सहायक होते हैं ?
3. दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन की महता पर प्रकाश डालें।
4. पारस्परिक निर्भरता के सभी मॉडल का विस्तार से वर्णन करो।
5. सम्पूर्ण संचार से क्या अभिप्रायहै? इसकोप्रभावित करने वाले महतवपूर्ण घटकों का उल्लेख करो।